27.04.19

← पाठ-2 →

← वर्ण विचार →

वर्ण का अर्थ -

वर्ण भाषा की लघुतम इकाई है, जिसे खंड़ो में विभाजित नहीं किया जा सकता। वर्ण का दूसरा नाम अक्षर भी है।

वर्णमाला का अर्थ-

वर्णों के क्रमबद्ध एवम् व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

वर्ण के प्रकार :

हिन्दी में वर्ण दो प्रकार के होते हैं -

क) स्वर -

वे वर्ण जिनके स्वतंत्र उच्चारण में अन्य ध्वनियों की सहायता नहीं ली जाती, वे वर्ण स्वर कहलाते हैं।

जैसे : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वरों के भेद-

1) ह्रस्व स्वर -

जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। वे हैं- अ, इ, उ, ऋ

2) दीर्घ स्वर -

जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय (दो मात्रा का) लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। वे हैं - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

ग) प्लुत स्वर –
जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वर से लगभग तिगुना समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। इसका चिह्न है (३) जैसे: ओ३म्

ख) व्यंजन –
जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, वे व्यंजन कहलाते हैं।

व्यंजन के भेद –
व्यंजन को मुख्यत: तीन भागों में बाँटा गया है–

1) स्पर्श व्यंजन –
जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुख के अलग-अलग स्थानों को स्पर्श करती है, वे स्पर्श व्यंजन कहलाती है। यहाँ वायु, कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत व ओठ का स्पर्श कर बाहर आती है। स्पर्श व्यंजन 25 हैं।

वर्ग	व्यंजन
क वर्ग	क, ख, ग, घ, ङ
च वर्ग	च, छ, ज, झ, ञ
ट वर्ग	ट, ठ, ड, ढ, ण
त वर्ग	त, थ, द, ध, न
प वर्ग	प, फ, ब, भ, म

2. अंतःस्थ व्यंजन –
जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ मुख से किसी भी भाग को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती वे अंतःस्थ व्यंजन कहलाते हैं। ... संख्या चार है – य, र, ल, व

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

2. ~~ऊष्म व्यंजन~~

अनुस्वार – (ं) –
अनुस्वार (ं) के उच्चारण में वायु केवल नाक से निकलती है। इसे (ं) चिह्न द्वारा दर्शाया जाता है। जैसे:

गङ्गा – गंगा
चञ्चल – चंपल
डण्डा – डंडा
मन्द – मंद
सम्बन्ध – संबध

3. ऊष्म व्यंजन –
वे व्यंजन जिनके उच्चारण में वायु मुख से घर्षण के साथ थोड़ी गर्म होकर बाहर निकले उसे ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये भी चार हैं – श, ष, स, ह

अनुनासिक – (ँ) –
जब किसी वर्ण का उच्चारण करते समय वायु मुँह और नाक से एक साथ निकलती है तब अनुनासिक का प्रयोग होता है। जैसे: बाँस, टाँग, आँख, मुँह आदि।

विसर्ग – इसका
इसका उच्चारण करते वक़्त 'ह' की ध्वनि निकलती है। तत्सम शब्दों में ही इसका प्रयोग किया जाता है। जैसे: अत:, प्रात:, वस्तुत: आदि।

आगत ध्वनियाँ –
विदेशी भाषाओं के शब्द जब हिंदी में प्रयुक्त किए जाते हैं तो उनके लिए कुछ ध्वनियाँ विकसित की गई हैं।

जैसे : ऑक्सिजन, जहाज़, मैच, कमाल आदि।
प्रॉक, मॉल
कागज, खजाना
फसल, फन, सफ़, आदि।

संयुक्त व्यंजन -
दो भिन्न व्यंजनों तथा एक स्वर के परस्पर संयोग को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में प्रमुख चार संयुक्त व्यंजन हैं - क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

× क्ष = क् + ष् + अ — क्षमा, क्षण

× त्र = त् + र् + अ — त्रिलोक, त्रिशूल

× ज्ञ = ज् + ञ् + अ — ज्ञानी, ज्ञान

× श्र = श् + र् + अ — श्रम, श्रमिक

द्वित्व व्यंजन -
किसी शब्द में जब दो समान व्यंजन प्रयुक्त हों, जिसमें पहला व्यंजन स्वर रहित हो, तथा दूसरा स्वर सहित, उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं।
जैसे - झिल्ली, बिल्ली

संयुक्ताक्षर -
किसी शब्द में जब दो असमान व्यंजन प्रयुक्त हों, जिसमें पहला व्यंजन स्वर रहित हो तथा दूसरा स्वर सहित, उसे संयुक्ताक्षर कहते हैं।

श्वास के भेद -
श्वास (प्राण-वायु की मात्रा) के आधार पर व्यंजन वर्णों के दो भेद हैं -

क) अल्पप्राण   ख) महाप्राण

क) अल्पप्राण -
जिन व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास वायु कम मात्रा में कमजोर तथा कम वेग से बाहर निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं।

वर्गों के पहले, तीसरे एवम् पंचम वर्ण तथा य, र, ल, व इसके अंतर्गत आते हैं।
जैसे - क, ग, ङ
च, ज, ञ
ट, ड, ण
त, द, न
प, ब, म
य, र, ल, व

ख) महाप्राण -
जिन व्यंजन वर्णों के उच्चारण में श्वास वायु अधिक मात्रा में अधिक वेग से बाहर निकलती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं।

वर्गों के दूसरे तथा चौथे वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन इसके अंतर्गत आते हैं।
जैसे : ख, घ
छ, झ
ठ, ढ
थ, ध
फ, भ
श, ष, स, ह

स्वर तंत्रियों में होने वाले कंपन के आधार पर व्यंजन वर्णों के भेद—

स्वर तंत्रियों के होने वाले कंपन के आधार पर व्यंजन वर्णों के दो भेद हैं—

क) सघोष वर्ण—

जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन पैदा होती है, उन्हें सघोष वर्ण कहते हैं।

जैसे: सभी स्वर वर्ण

ग, घ, ङ

ज, झ, ञ

ड, ढ, ण

द, ध, न

ब, भ, म

ढ़, ज़, ह

य, र, ल, व

ख) अघोष वर्ण—

जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में गूँज उत्पन्न नहीं होती, उन्हें अघोष वर्ण कहते हैं।

जैसे:

क, ख

च, छ

ट, ठ

त, थ

प, फ

श, ष, स

Ashish
14/05/19

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera